अध्याय 5

एलीपज का पहला भाषण (भाग 2)

बुराई करने वाले दु:ख की कटनी काटते हैं (5:1-7)

[1]"पुकार कर देख; क्या कोई है जो तुझे उत्तर देगा? और पवित्रों में से तू किस की ओर फिरेगा? [2]क्योंकि मूढ़ तो खेद करते करते नष्ट हो जाता है, और भोला जलते जलते मर मिटता है। [3]मैं ने मूढ़ को जड़ पकड़ते देखा है; परन्तु अचानक मैं ने उसके वासस्थान को धिक्कारा। [4]उसके बच्चे सुरक्षा से दूर हैं, और वे फाटक में पीसे जाते हैं, और कोई नहीं है जो उन्हें छुड़ाए। [5]उसके खेत की उपज भूखे लोग खा लेते हैं, वरन् कटीली बाड़ में से भी निकाल लेते हैं; और प्यासा उनके धन के लिये फन्दा लगाता है। [6]क्योंकि विपत्ति धूल से उत्पन्न नहीं होती, और न कष्ट भूमि में से उगता है; [7]परन्तु जैसे चिंगारियाँ ऊपर ही ऊपर को उड़ जाती हैं, वैसे ही मनुष्य कष्ट भोगने के लिये उत्पन्न हुआ है।"

आयत 1. "क्या कोई है जो तुझे उत्तर देगा?" एलीपज ने स्वर्गीय जीवों (**पवित्रों**) के होने की बात की जो अय्यूब की ओर से विनती कर सकते थे। बाद के एक भाषण में अय्यूब ने उसके विचार का पता लगाया जो मध्यस्थ हो सकता था (9:33)।

आयतें 2, 3. इब्रानी शब्द *'ewil* (*इविल*) जिसका अनुवाद **मूढ़** हुआ है का मूल अर्थ "जमना, गाढ़ा होना" है। विशेषण शब्द का अर्थ नैतिक रूप में बुरे अर्थ में "मूढ़" है। ऐसा व्यक्ति अप्रासंगिक है और पवित्र बातों के प्रति अपमान को दिखाता है। वह झगड़ालू है और सीखने को तैयार नहीं है।[1] "मूढ़" उसको दर्शाता है जो "बुद्धि और शिक्षा को तुच्छ जानता" (नीतिवचन 1:7; NIV), जिसे "अपनी ही चाल सीधी जान पड़ती है" (नीतिवचन 12:15; KJV)। *Potheh* (*पोथेह*) शब्द जिसका अनुवाद **भोला** हुआ है का मूल अर्थ "खुला हुआ होना" है।[2] इसलिए ऐसा व्यक्ति अपने विचारों की दुविधा में है। वह किसी भी प्रभाव को ग्रहण करने के लिए खुला हुआ है और भीड़ के साथ साथ चल पड़ता है। वह जल्दबाज, सीधा है और आसानी से गुमराह हो जाता है। "मूढ़" और "भोले" लोग **खेद करते करते** और **जलते जलते** मर जाते हैं। स्पष्टतया एलीपज यह संकेत दे रहा था कि अय्यूब मूढ़ था।

आयत 4. "उसके बच्चे सुरक्षा से दूर हैं, और वे फाटक में पिसे जाते हैं, और कोई नहीं है जो उन्हें छुड़ाए।" नगर का "फाटक" निर्णय लेने और न्याय करने के लिए इकट्ठा होने की जगह होता था (29:7; 31:21; भजन संहिता 127:5)। क्या एलीपज उस त्रासदी का इशारा कर रहा था जो अय्यूब के पुत्रों के ऊपर पड़ी थी? बेशक ये शब्द अय्यूब के दिल को चीर गए होंगे यदि उसे लगा हो कि उसके अपने पाप के कारण उसके बच्चों पर विपत्ति आई थी।

आयत 5. "उसके खेत की उपज भूखे लोग खा लेते हैं, वरन् कटीली बाड़ में से भी

निकाल लेते हैं।'' पुराने जमाने में लोग फसल को काटकर कई बार उसे कटीली झाड़ियों से ढक देते थे ताकि जानवर आकर उन्हें खा न लें। यह आयत इस बात का संकेत दे रही हो सकती है कि कांटों के बीच उगी फसल का भाग भी खा लिया जाता था। **प्यासा** उसे कहा गया है जो जैसे तैसे मूढ़ व्यक्ति के बच्चों को छल से लूट लेने की खोज में रहता है। यह चित्र कभी समृद्ध रहे मूढ़ के पुत्रों की निराशा का है। वे अपने आपको ''प्यासे से [जो] उनके लिए फंदा लगाता है'' बचा नहीं पाते हैं।

आयत 6. एलीपज ने तर्क दिया कि विपत्ति मूढ़ पर ही आती है। इसलिए वे सब जिन पर विपत्ति आती है मूढ़ ही होंगे।[3] उसने अय्यूब को समझाया कि अपने बच्चों के शोक का ज़िम्मेदार वह स्वयं ही है।

आयत 7. ''परन्तु जैसे चिंगारियाँ ऊपर ही ऊपर को उड़ जाती हैं, वैसे ही मनुष्य कष्ट भोगने के लिये उत्पन्न हुआ है।'' यह आयत बुद्धि की लोकोक्ति हो सकती थी। ''चिंगारियां'' मूलतया ''रेशेफ के पुत्र'' (*b^{e}ney reshep, बिने रेशेप*) है। ''रेशेफ'' महामारी का उत्तर पश्चिमी सामी देवता था, उसे बिजली की गरज से जोड़ा जाता था (भजन संहिता 78:48)। रॉबर्ट एल. आल्डन ने कहा कि ''[पुराने नियम में] इस शब्द के छह में से एक बार में भी कोई यह मान नहीं सकता कि बोलने वाले व्यक्ति का ऐसे देव में विश्वास हो।''[4]

परमेश्वर के सामने अपना मुक़द्दमा रखना (5:8–16)

8''परन्तु मैं तो परमेश्वर ही को खोजता रहूँगा और अपना मुक़द्दमा परमेश्वर पर छोड़ दूँगा; 9वह तो ऐसे बड़े काम करता है जिनकी थाह नहीं लगती, और इतने आश्चर्यकर्म करता है, जो गिने नहीं जाते। 10वही पृथ्वी के ऊपर वर्षा करता, और खेतों पर जल बरसाता है। 11इसी रीति वह नम्र लोगों को ऊँचे स्थान पर बिठाता है, और शोक का पहिरावा पहिने हुए लोग ऊँचे पर पहुँचकर बचते हैं। 12वह धूर्त लोगों की कल्पनाएँ व्यर्थ कर देता है, और उनके हाथों से कुछ भी बन नहीं पड़ता। 13वह बुद्धिमानों को उनकी धूर्तता ही में फँसाता है; और कुटिल लोगों की युक्ति दूर की जाती है। 14उन पर दिन को अन्धेरा छा जाता है, और दिन दुपहरी में वे रात के समान टटोलते फिरते हैं। 15परन्तु वह दरिद्रों को उनके वचनरूपी तलवार से और बलवानों के हाथ से बचाता है। 16इसलिये कंगालों को आशा होती है, और कुटिल मनुष्यों का मुँह बन्द हो जाता है।''

एलीपज ने अय्यूब से अपना मुकद्दमा परमेश्वर के सामने रखने का आग्रह किया। उसने संसार के परमेश्वर के नियन्त्रण में होने की तीन बातों पर ज़ोर दिया: (1) मौसम और मनुष्यजाति का भविष्य उसके हाथ में होना; (2) बुराई करने वालों को दण्ड; और (3) निर्धन और लाचार लोगों की रक्षा।

आयतें 8, 9. एलीपज के मन में परमेश्वर का जो **इतने आश्चर्यकर्म करता है, जो गिने नहीं जाते**, उच्च विचार था, भजन लिखने वाले ने गाया, ''यहोवा महान और अति स्तुति के योग्य है, और उसकी बढ़ाई अगम है'' (भजन संहिता 145:3)। प्रेरित पौलुस ने पुकारकर कहा, ''आहा! परमेश्वर का धन और बुद्धि और ज्ञान क्या ही गंभीर है! उसके विचार कैसे अथाह,

और उसके मार्ग कैसे अगम हैं!'' (रोमियों 11:33)। मनुष्यजाति के लिए आवश्यक है कि वह अपनी गुहार केवल उसी के सामने लगाए।

आयत 10. पलिश्तीन में या रेगिस्तान के किनारों पर रहने वालों के लिए **जल** सबसे कीमती चीज़ था। इसके बहुतायत में होने का अर्थ जीवन था और इसके न होने का अर्थ दु:ख और यहां तक कि मृत्यु था। जिस प्रकार से परमेश्वर ने **पृथ्वी के ऊपर वर्षा** दी है उसी प्रकार से हमारा प्रभु यीशु मसीह हमारे लिए जीवन का जल देता है: ''जो मुझ पर विश्वास करेगा, जैसा पवित्रशास्त्र में आया है, 'उसके हृदय में से जीवन के जल की नदियां बह निकलेंगी''' (यूहन्ना 7:38)।

आयत 11. ''इसी रीति वह नम्र लोगों को ऊँचे स्थान पर बिठाता है, और शोक का पहिरावा पहिने हुए लोग ऊँचे पर पहुँचकर बचते हैं।'' इस आयत के शब्द हमें यीशु के धन्यवचनों का स्मरण दिलाते हैं: ''धन्य हैं वे, जो मन के दीन हैं, क्योंकि स्वर्ग का राज्य उन्हीं का है। धन्य हैं वे, जो शोक करते हैं, क्योंकि वे शांति पाएंगे'' (मत्ती 5:3, 4)।

आयत 12. ''वह धूर्त लोगों की कल्पनाएँ व्यर्थ कर देता है,'' ''धूर्त लोगों'' (*ʿarumim, अरूमिम*) उन लोगों को कहा गया है जो दूसरों के साथ अपने व्यवहार में कपट का इस्तेमाल करते हैं। *ʿarum* (*आरूम*) शब्द का इस्तेमाल उत्पत्ति 3:1 में सांप के लिए किया गया है जब उसने परमेश्वर के विरुद्ध पाप करने के लिए आदम और हव्वा को बहकाया था। **''और उनके हाथों से कुछ भी बन नहीं पड़ता।''** ''बन पड़ता'' (*thushiyyah, थुशिय्याह*) बुद्धि के साहित्य में एक तकनीकी शब्द है जिसका अनुवाद ''अच्छी समझ'' या ''सफलता'' हो सकता है।[5]

आयत 13. ''वह बुद्धिमानों को उनकी धूर्तता ही में फँसाता है।'' नये नियम में अय्यूब की पुस्तक में इसे केवल इसी आयत में उद्धृत किया गया है (देखें 1 कुरिन्थियों 3:19)। **धूर्तता** *pathal* (*पाथाल*) क्रिया का कृदंत रूप है जिसका मूल अर्थ ''विकृत लोग'' है। ''धूर्त'' और ''धूर्तता'' उनके लिए समानार्थी शब्द लगते हैं जिनका अंत विनाश है।

आयत 14. ''उन पर दिन को अन्धेरा छा जाता है, और दिन दुपहरी में वे रात के समान टटोलते फिरते हैं।'' यह आज भी सच है क्योंकि ''उन अविश्वासियों के लिए, जिनकी बुद्धि इस संसार के ईश्वर ने अन्धी कर दी है, ताकि मसीह जो परमेश्वर का प्रतिरूप है, उसके तेजोमय सुसमाचार का प्रकाश उन पर न चमके'' (2 कुरिन्थियों 4:4)।

आयत 15. एलीपज कह रहा था कि दबे कुचले लोगों के लिए शांति और उद्धार का देने वाला परमेश्वर ही है। वह उनके विरुद्ध खड़ा हो जाता है जो अपने साथियों के साथ बुरा व्यवहार करते हैं।

आयत 16. आशा की अय्यूब की सोच में कमी थी (7:6; 17:15; 19:10)। भयंकर दु:ख उठाने वाले व्यक्ति के लिए आशा बनाए रखना कठिन होता है।

“धन्य है वह मनुष्य जिसको परमेश्वर ताड़ना देता है” (5:17–27)

[17]“देख, क्या ही धन्य है वह मनुष्य, जिसको परमेश्वर ताड़ना देता है; इसलिये तू सर्वशक्तिमान की ताड़ना को तुच्छ मत जान। [18]क्योंकि वही घायल करता, और वही पट्टी भी बाँधता है; वही मारता है, और वही अपने हाथों से चंगा भी करता है। [19]वह तुझे छः विपत्तियों से छुड़ाएगा; वरन सात से भी तेरी कुछ हानि न होने पाएगी। [20]अकाल में वह तुझे मृत्यु से, और युद्ध में तलवार की धार से बचा लेगा। [21]तू वचनरूपी कोड़े से बचा रहेगा और जब विनाश आए, तब भी तुझे भय न होगा। [22]तू विनाश और अकाल के दिनों में हँसमुख रहेगा, और तुझे बनैले जन्तुओं से डर न लगेगा। [23]वरन् मैदान के पत्थर भी तुझ से वाचा बाँधे रहेंगे, और वनपशु तुझ से मेल रखेंगे। [24]तुझे निश्चय होगा कि तेरा डेरा कुशल से है, और जब तू अपने निवास में देखे तब कोई वस्तु खोई न होगी। [25]तुझे यह भी निश्चय होगा कि मेरे बहुत वंश होंगे, और मेरी सन्तान पृथ्वी की घास के तुल्य बहुत होगी। [26]जैसे पूलियों का ढेर समय पर खलिहान में रखा जाता है, वैसे ही तू पूरी आयु का होकर कब्र को पहुँचेगा। [27]देख, हम ने खोज खोजकर ऐसा ही पाया है; इसे तू सुन, और अपने लाभ के लिये ध्यान में रख।”

एलीपज ने एक नया विचार बताया, जो दु:ख उठाने वाले व्यक्ति के लिए शांति देने वाला हो सकता है। दु:ख किसी को जीवन में ताड़ना देने, शिक्षा देने या सुधारने के लिए हो सकता है। पुस्तक में आगे एलीहू ने इसी विषय पर बात की (34:16–33)।

आयत 17. निश्चित रूप में यह बाइबल का नियम है कि विश्वासी व्यक्ति के जीवन में **ताड़ना** या अनुशासन शांति देने वाला हो सकता है। बुद्धिमान ने कहा, “हे मेरे पुत्र, यहोवा की शिक्षा से मुंह न मोड़ना, और जब वह तुझे डांटे, तब तू बुरा न मानना, क्योंकि यहोवा जिस से प्रेम रखता है उसको डांटता है, जैसे कि बाप उस बेटे को जिसे वह अधिक चाहता है” (नीतिवचन 3:11, 12)। इब्रानियों के लेखक ने इसी बात पर चर्चा की:

> तुम ने पाप से लड़ते हुए उससे ऐसी मुठभेड़ नहीं की कि तुम्हारा लहू बहा हो; और तुम उस उपदेश को जो तुम को पुत्रों के समान दिया जाता है, भूल गए हो: “हे मेरे पुत्र, प्रभु की ताड़ना को हल्की बात न जान, और जब वह तुझे घुड़के तो साहस न छोड़। क्योंकि प्रभु जिससे प्रेम करता है, उसकी ताड़ना भी करता है, और जिसे पुत्र बना लेता है, उसको कोड़े भी लगाता है।” तुम दु:ख को ताड़ना समझकर सह लो; परमेश्वर तुम्हें पुत्र जानकर तुम्हारे साथ बर्ताव करता है, वह कौन सा पुत्र है जिसकी ताड़ना पिता नहीं करता? यदि वह ताड़ना जिसके भागी सब होते हैं, तुम्हारी नहीं हुई, तो तुम पुत्र नहीं, पर व्यभिचार की सन्तान ठहरे। फिर जब कि हमारे शारीरिक पिता भी हमारी ताड़ना किया करते थे और हमने उनका आदर किया तो क्या आत्माओं के पिता के और भी अधीन न रहें जिससे हम जीवित रहें। ... वर्तमान में हर प्रकार की ताड़ना आनन्द की नहीं; पर शोक ही की बात दिखाई पड़ती है, तौभी जो उसको सहते-सहते पक्के हो गए हैं, बाद में उन्हें चैन के साथ धर्म का प्रतिफल मिलता है (इब्रानियों 12:4–11)।

यह वास्तव में एक सच्चा नियम है। परमेश्वर के लोगों ने युगों से इसे माना है। परन्तु क्या अय्यूब के दु:ख उस विशेष उद्देश्य के लिए आए थे? हमें यह मानना पड़ेगा कि परमेश्वर का भय मानने वाले इस व्यक्ति के जीवन में उन्होंने इस लक्ष्य को पा लिया।

आयतें 18–22. इन आयतों में एलीपज ने मनुष्यजाति को सुधारने और अनुशासित करने के परमेश्वर के ढंगों का सुझाव दिया: **''क्योंकि वही घायल करता, और वही पट्टी भी बाँधता है; वही मारता है, और वही अपने हाथों से चंगा भी करता है।''** ''पट्टी बांधता'' और ''चंगा करता'' लोगों पर परमेश्वर की ताड़ना के लाभदायक परिणाम हैं। पुस्तक के अंत में अय्यूब को ये आशिषें मिलीं (42:10–17)। **''वह तुझे छः विपत्तियों से छुड़ाएगा; वरन सात से भी तेरी कुछ हानि न होने पाएगी।''** एलीपज ने कई परेशानियों में से कुछ बताईं जिनसे परमेश्वर धर्मी व्यक्ति को छुड़ाएगा: **अकाल**, **युद्ध**, **कोड़े**, **विनाश**, और **बनैले जंतु**।

आयत 23. ''वरन् मैदान के पत्थर भी तुझ से वाचा बाँधे रहेंगे, और वनपशु तुझ से मेल रखेंगे।'' एलीपज ने तर्क दिया कि अय्यूब यदि परमेश्वर की ताड़ना को मान ले तो उसे राहत मिलेगी। उसे डरने का कोई कारण नहीं, यहां तक कि प्रकृति की चीज़ों से भी। इसके बजाय उसने उनके साथ सुलह के साथ रहना था। जॉन ई. हार्टले ने बताया है:

> जंगली जानवर या जंगली जानवरों के झुण्ड का हमला पूरे गांव की तबाही कर सकता था। ये जानवर पहले से सीमित भोजन को कम करके पशुओं और फसल को तबाह कर देते। ... इसके अलावा *मैदान के पत्थर* भी वास्तविक खतरा हो सकते थे क्योंकि खेत में बहुत पत्थर होना खेत की उपज को कम करता है। पुराने जमाने की सेना अपने शत्रु को कई बार जोते हुए खेतों के पत्थर फैंककर दण्ड देती थी [उदाहरण के लिए, 2 राजाओं 3:19, 25]।[6]

आयतें 24–26. एलीपज को विश्वास था कि अय्यूब इससे स्वस्थ हो जाएगा, और उसके बहुत से बच्चे होंगे और **पूरी आयु का होकर कब्र को पहुंचेगा** यदि वह अपने पाप को मान ले। किसी का **डेरा कुशल** होने का अर्थ था कि उसके घर परिवार में सब कुछ ठीक ठाक है। रोगी हो चुके और तूफ़ान में अपने दस बच्चे खो चुके व्यक्ति के लिए इसमें कोई तसल्ली नहीं थी।

आयत 27. ''देख, हम ने खोज खोजकर ऐसा ही पाया है; इसे तू सुन, और अपने लाभ के लिये ध्यान में रख।'' एच. एच. रोअले ने टिप्पणी की, ''एलीपज ने अपनी बात थोड़ी धर्माध्यक्ष की टिप्पणी की तरह की, यह मानते हुए कि उसे पूरी सच्चाई की समझ है – जो तंग सोच वाले लोगों की पहचान होती।[7]

होमेर हेली ने अध्याय 4 और 5 की शानदार समीक्षा दी है:

> एलीपज का भाषण, विशेषकर अंतिम भाग, बड़े सुंदर ढंग से कहा गया और बड़ी सच्चाई को दिखाता है। परन्तु पूरे भाषण में दो बुनियादी खामियां हैं: 1) यह अय्यूब पर लागू नहीं होता क्योंकि उसने अपने दु:ख सहने के अनुरूप कोई पाप नहीं किया था; इसीलिए वह यह नहीं मान सकता था कि यह पाप का दण्ड था। यह सच है इस कारण यह उसके पिछले दुष्ट जीवन से पिछले भक्तिपूर्ण जीवन में बदलने के लिए ताड़ना या सुधार नहीं हो

सकता। सो इस दृष्टिकोण के लिए यह बेकार था। 2) परमेश्वर और उसके कामों के लिए इतने अच्छे ढंग से वर्णन करके एलीपज ने परमेश्वर की आशीष को केवल भौतिक और बाहरी ही माना जो शारीरिक या भौतिक उद्देश्य को ही पूरा करते हैं। पवित्र शास्त्र चाहे यह सिखाता है कि परमेश्वर की वफ़ादारी सेवा करने के प्रतिफल हैं, पर ऐसा लगता है कि एलीपज ने कभी इस बात को नहीं माना या परमेश्वर की आत्मिक वास्तविकता में उसे ढूंढ़ने के विचार पर ध्यान नहीं दिया, जो सृजनहार और सृष्टि की संगति और एकता के लिए आत्मा की तड़प को शांत कर सके।[8]

प्रासंगिकता

जब आप कोई सलाह देते हैं (अध्याय 5)

अध्याय 5 में एलीपज ने अय्यूब को अपना जवाब देना जारी रखा। वह अपने मित्र को अच्छी सलाह देने की कोशिश कर रहा था जो विचारणीय बात थी। एलीपज ने बहुत सी बातें कहीं जो तकनीकी रूप में सही थीं, परन्तु वह एक गलत सोच से काम कर रहा। उसका मानना था कि अय्यूब अपने जीवन में किए किसी पाप के कारण दु:ख उठा रहा है। उसके समय में लोगों की ऐसी ही सोच का पता चलता है। एलीपज ने परमेश्वर की सामर्थ पर अच्छा उपदेश दिया, पर लगता है कि वह अय्यूब की पीड़ा के प्रति बेदर्द था। एलीपज ने कुछ अच्छी सलाह दी परन्तु उसमें समझ की बात नहीं थी। उसने अच्छी लगने वाली बातें तो कीं पर उसमें सही समझ की कमी थी। अय्यूब के निर्दोष होने और उसकी खराई पर सवाल करके और यह संकेत देकर कि परमेश्वर ताड़ना दे रहा है उसने गलत समझा।

हम सब के लिए, ऐसा समय आएगा जब हमारे नज़दीकी मित्रों को हमारी आवश्यकता होगी और वे सलाह के लिए हमारे पास आएंगे। और तो और हमारे अपने जीवनों में कई बार हमें अपने मित्रों की सलाह की आवश्यकता होगी। इस पाठ से हमें पता चलता है कि हमारे मित्रों का इरादा और नीयत अच्छी हो सकती है पर फिर भी वे ऐसी बेकार सलाह दे सकते हैं जो पूरी सच्चाई पर आधारित न हो। सलाह देते समय, विशेषकर एक मसीही मित्र के रूप में इन चार नियमों को याद रखें।

पहला, सदा प्रेम से सच्चाई बताएं। एलीपज ने आयत 2 में सच बोला था जब उसने कहा, ‘‘मूढ़ तो खेद करते करते नष्ट हो जाता है, और भोला जलते जलते मर मिटता है।'' हम सब जानते हैं कि अपरिवर्तित क्रोध क्या कर सकता है और जलन क्या कर सकती है। परन्तु 3 और 4 आयतों में एलीपज सीमा लांघ गया, जब उसने उस सच्चाई को अपने मित्र के साथ जोड़कर उसका यह अर्थ निकाल लिया कि अय्यूब ही वह मूढ़ है। आयत 7 में एलीपज ने सच बोला जब उसने कहा कि ‘‘मनुष्य कष्ट भोगने के लिए ही उत्पन्न हुआ है।'' यूहन्ना 16:33 में यीशु ने यह सच्चाई बताई कि जब तक हम इस संसार में रहेंगे तब तक परेशानियां रहेंगी, परन्तु एलीपज ने सीमा लांघ दी जब उसने यह संकेत दिया कि सब परेशानियां मनुष्य के कारण आती हैं। इसके अलावा एलीपज ने सच बोला और बहुत अच्छी सलाह दी जब उसने आयत 8 में अय्यूब को परमेश्वर की खोज करने के लिए प्रोत्साहित किया। हम सब को परमेश्वर को ढूंढ़ना आवश्यक

है। क्या हमें उसे तब ढूंढ़ना चाहिए जब हम परेशान हों। बिल्कुल! हमें उसे अच्छे समयों में भी ढूंढ़ना चाहिए। परन्तु एलीपज ने फिर से सीमा लांघ दी, जब उसने यह संकेत दिया कि अय्यूब निर्दोष नहीं है, और यह कि उसने शुद्ध मन से परमेश्वर को नहीं ढूंढा।

परमेश्वर की संतान को हमेशा सच्चाई बताने वाला कहा जाता है। ''सच'' शब्द का अर्थ तथ्य के साथ मेल खाने वाला होना, और परमेश्वर के प्रकाश के साथ मेल खाने वाला होना है। परमेश्वर के बालकों के लिए उस सच्चाई को बताना आवश्यक है जो उसके वचन में प्रकट की गई है। अध्याय 4 में, एलीपज ने परमेश्वर की ओर से मिले संदेश होने का दावा किया था जो उसे स्वप्न में मिला था। परन्तु 42:7 में यहोवा परमेश्वर ने एलीपज से कहा, ''मेरा क्रोध तेरे और तेरे दोनों मित्रों पर भड़का है, क्योंकि जैसी ठीक बात मेरे दास अय्यूब ने मेरे विषय कही है, वैसी तुम लोगों ने नहीं कही।'' प्रचारकों, बाइबल क्लास में पढ़ाने वालों और हर मसीही के लिए आवश्यक है कि वही प्रचार करें, सिखाएं और बोलें जो सही और सच है। इफिसियों 4:15 इस घेरे को और बड़ा कर देता है जहां बाइबल हम से ''*प्रेम में* सच्चाई से'' बोलने को कहती है (emphasis added)। कुछ लोग सच्चाई बोलते हैं पर वे इसे प्रेम से नहीं बोलते हैं।

किसी मण्डली की कहानी बताई जाती है जिन्होंने अपने पुलपिट मिनिस्टर की खोज में दो लोगों को ढूंढ़ा। उन्होंने उन्हें अलग-अलग रविवार में बुलाया और उन्हें एक ही अध्याय लूका 16 पर प्रचार करने को कहा। दोनों ने धनवान और लाज़र की कहानी को बड़े आवेश में बताया। दोनों एक ही निष्कर्ष पर पहुंचे कि धनवान पीड़ा में था जबकि लाज़र पिता अब्राहम की गोद में। परन्तु एक प्रचारक ने धनवान को नरक में वचन सुनाया; और उसने ऐसे प्रचार किया कि जैसे उसे और परमेश्वर को उस धनवान को वहां भेजने में आनन्द मिला। दूसरे प्रचारक ने धनवान के बारे में प्रचार किया; परन्तु सब को यह स्पष्ट था कि प्रचारक और परमेश्वर के मन में दु:ख था कि पीड़ा में जाने वाला व्यक्ति अनन्तकाल के लिए नष्ट हो जाता है। आपको क्या लगता है कि दोनों में से किसे प्रचारक के रूप में नियुक्त किया गया होगा?

हमें प्रेम से सच्चाई बोलने के लिए बुलाया गया है। अफसोस की बात है कि एलीपज ने अपने मित्रों के साथ अधिक सहानुभूति और प्रेम नहीं दिखाया। इफिसियों 4 आगे कहता है, ''कोई गन्दी बात तुम्हारे मुंह से न निकले, पर आवश्यकता के अनुसार वही जो उन्नति के लिए उत्तम हो, ताकि उस से सुनने वालों पर अनुग्रह हो'' (इफिसियों 4:29)। एलीपज ने अय्यूब को तसल्ली नहीं दी और निश्चित रूप में वह अय्यूब की पीड़ा और आवश्यकताओं के प्रति बहुत सावधान नहीं था।

दूसरा, लोगों को हमारे महिमामय परमेश्वर की ओर मोड़ें। यह तथ्य कि एलीपज ने अय्यूब के साथ परमेश्वर की सामर्थ की अद्भुत और भयानक बातें सांझा की, सराहनीय है। एलीपज ने परमेश्वर की महिमा की क्योंकि ''वह तो ऐसे बड़े काम करता है जिनकी थाह नहीं लगती, और इतने आश्चर्यकर्म करता है, जो गिने नहीं जाते'' (5:9)। एलीपज सही था जब उसने कहा कि हम उन आश्चर्यकर्मों को नहीं गिन सकते जो परमेश्वर कर सकता है। इफिसियों 3:20 कहता है कि परमेश्वर ''ऐसा सामर्थी है, कि हमारी विनती और समझ से कहीं अधिक काम कर सकता है, उस सामर्थ के अनुसार जो हम में कार्य करता है।''

एलीपज ने अय्यूब को याद दिलाया कि परमेश्वर वर्षा देता, खेतों पर जल बरसाता, नम्र

लोगों को ऊंचे स्थान पर बिठाता, और शोक करने वालों को ऊंचा उठाता है (5:10, 11)। उसने आगे कहा कि परमेश्वर इस संसार में सक्रिय रूप में लगा हुआ है जिस कारण ''कंगालों को आशा होती है'' (5:16)। फिर एलीपज ने उन लाभों और आशिषों को एक एक करके बताया जो परमेश्वर को ढूंढने से मिलते हैं। उसने इस बात का जिक्र किया कि परमेश्वर जख्मों पर पट्टी बांधता, लोगों की रक्षा करता और उन्हें बचाता है (5:17-27)। हम गाते हैं, ''परमेश्वर वह चश्मा है जिसमें से दस हज़ार आशिषें निकलती हैं।''

तीसरा, अनुमान लगाने और न्याय करने से बचें। अय्यूब का शरीर छालों से भरा हुआ था। वह गहरी पीड़ा में था और वह अभी भी दु:खी था। एलीपज परमेश्वर की इच्छा को उसके अपने अनुमानों से मिलाने की कोशिश कर रहा था इसलिए उसने यह ठान लिया कि परमेश्वर अय्यूब को इसलिए ताड़ना दे रहा है क्योंकि अय्यूब ने कुछ ऐसा किया था जिसके लिए वह परमेश्वर की ताड़ना का हक्कदार था। इब्रानियों 12:10-12 बताता है कि परमेश्वर अपने बच्चों को उनकी भलाई के लिए ताडना देता है और उस ताड़ना का परिणाम धार्मिकता और शांति की उपज होता है। परन्तु यहां अय्यूब के साथ ऐसा कुछ नहीं हुआ। (अध्याय 1 और 2 पढ़ने से हमें इसका पता चलता है।) अंतिम बात जिसकी अय्यूब को आवश्यकता थी वह उस पर गलत करने का आरोप लगाना था और निश्चय ही उसने ऐसा कुछ नहीं किया था जिससे उसे दण्ड दिया जाए। सामर्थपूर्ण और गम्भीर पहाड़ी उपदेश में, यीशु ने कहा, ''दोष मत लगाओ'' (मत्ती 7:1)। जब कोई मित्र गहरी पीड़ा में हो तो वह समय दोष लगाने या भाषण देने या आरोप लगाने का नहीं होता है। यह समय तसल्ली देने का होता है। यदि वह आपसे कोई सलाह मांगता है तो उसे सहजता से सलाह दें।

चौथा, उपदेश देने से बचे - विशेषकर जब लोग गहरी पीड़ा में हों। अय्यूब इस तथ्य से अच्छी तरह से परिचित था कि परमेश्वर भययोग्य परमेश्वर है जो अद्‌भुत काम करता और कर सकता है। परन्तु इस समय पर उसे उपदेश की आवश्यकता नहीं थी। उसे केवल इतनी आवश्यकता थी कि कोई उसकी पीड़ा को समझे। अय्यूब को राह, शांति और उसके बोझ को उठाने के लिए उसकी सहायता करने वाले उसके मित्र की भी आवश्यकता थी। गलातियों 6:2 हमें ऐसा करने के लिए समझाता है, ''तुम एक दूसरे का भार उठाओ, और इस प्रकार मसीह की व्यवस्था को पूरा करो।'' रोमियों 12:15 हमें बताता है, ''आनन्द करनेवालों के साथ आनन्द करो, और रोनेवालों के साथ रोओ।'' अय्यूब को चाहिए था कि एलीपज उसके साथ धीरज रखे, उसके लिए प्रार्थना करे, और उसके साथ रोए। जब लोग परेशान हों तो उन्हें उपदेश देने की आवश्यकता नहीं होती। अफ़सोस कि एलीपज ने अय्यूब को उपदेश दे दिया।

एलीपज का भाषण आलोचनात्मक और आरोप लगाने वाला है। यह एक अंहकार से भरी टिप्पणी के साथ भी खत्म होता है। एलीपज ने कहा कि ''देख, हम ने खोज खोजकर ऐसा ही पाया है'' (5:27)। इस भाषण का उद्देश्य अच्छा हो सकता है पर यह सहायक, प्रोत्साहित करने वाला या करुणामय नहीं था। किसी को भी ऐसी सलाह से जो कठोर बेदर्द हो, कोई लाभ नहीं मिलता।

एफ़. मिलस

टिप्पणियां

[1]लुडविग कोहलर ऐंड वाल्टर बामगार्टनर, *द हिब्रू ऐंड अरेमिक लेक्सिकन ऑफ़ द ओल्ड टैस्टामैंट,* स्टडी एडिशन, अनु. व सम्पा. एम. ई. जे. रिचर्डसन (बोस्टन: ब्रिल, 2001), 1:21. [2]देखें फ्रांसिस ब्राउन, एस. आर. ड्राइवर, ऐंड चार्ल्स ए. ब्रिगस, *ए हिब्रू ऐंड इंग्लिश लैक्सिकन ऑफ़ द ओल्ड टैस्टामैंट* (ऑक्सफोर्ड: क्लेरेंडन प्रैस, 1968), 834. [3]एच. एच. रोअले, *अय्यूब,* द सेंचुरी बाइबल, न्यू सीरीज़ (ग्रीनवुड, साउथ कैरोलाइना: द अटिक प्रैस, Inc., 1970), 60. [4]रॉबर्ट एल. आल्डन, *अय्यूब,* द न्यू अमेरिकन कॉमैंट्री (पृष्ठ नहीं: ब्रॉडमैन ऐंड होल्मन पब्लिशर्स, 1993), 91. [5]कोहलर ऐंड बामगार्टनर, 2:1713–14. [6]जॉन ई. हार्टले, *द बुक ऑफ़ अय्यूब,* द न्यू इंटरनेशनल कॉमैंट्री ऑन द ओल्ड टैस्टामैंट (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं.. 1988), 127. [7]रोअले, 66. [8]होमेर हेली, *ए कॉमैंट्री ऑन अय्यूब* (पृष्ठ नहीं: रिलिजियस सप्लाई, Inc., 1994), 69. [9]बेंजामिन बेड्डोम, ''गॉड इज़ द फाउंटेन व्हेन्स,'' *साँग्स ऑफ़ फ़ेथ ऐंड प्रेज़,* संक. व सम्पा. आल्डन एच. हावर्ड (वेस्ट मुनरो, लुइसियाना: हॉवर्ड पब्लिशिंग कं., 1994)।